चूहे की दिल्ली यात्रा

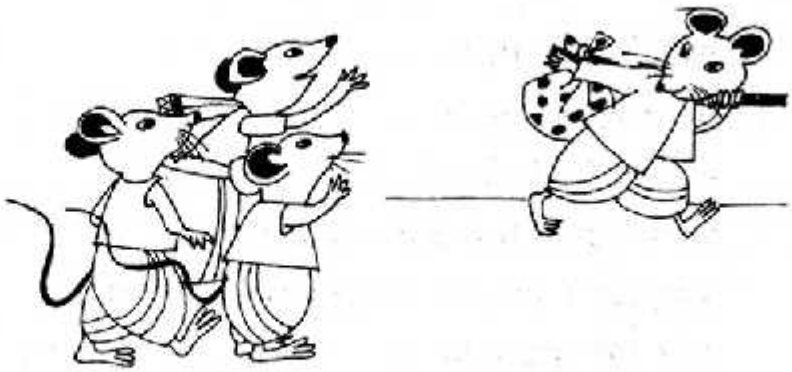

चूहे ने यह कहा कि चुहिया, छाता और घड़ी दो,
लाया था जो बड़े सेठ के घर से, वह पगड़ी दो।

मटर मूँग जो भी है घर में, वही सब मिल खाना,
खबरदार तुम लोग कभी बिल से बाहर मत जाना।

बिल्ली एक बड़ी पाजी है, रहती घात लगाए,
ना जाने कब किसे दबोचे, कब चट कर जाए।

सो जाओ सब लोग, दरवाज़े पर लगाकर किल्ली,
आज़ादी का जश्न देखने, मैं जाता हूँ दिल्ली।

दिल्ली में देखूँगा, आज़ादी का नया ज़माना,
लाल किले पर खूब तिरंगे झंडे का लहराना।

अब न रहे अंग्रेज़, देश पर काबू है अपना,
पहले जहाँ लाट साहब थे, राष्ट्रपति है अपना।

घूमूँगा दिन रात, करूँगा बातें नहीं किसी से,
हाँ, फुरसत जो मिली, तो मिलूँगा मैं प्रधानमंत्री से।

गांधी युग में कौन उड़ाए, चूहों की अब खिल्ली
आज़ादी का जश्न देखने, अब मैं जाता हूँ दिल्ली।

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. चूहे ने दिल्ली जाने के लिए चुहिया से क्या–क्या माँगा?
2. यदि तुम दिल्ली जाते तो क्या–क्या ले जाते?
3. चूहे ने प्रधानमंत्री से क्या–क्या बातें की होंगी?
4. अपने देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कौन–कौन हैं?
5. तुमने कभी कोई यात्रा की हो तो उसके बारे में लिखो।
6. खाली जगह में कविता के लिए दो–तीन चित्र बनाओ।
7. चूहा चूहिया को साथ क्यों नहीं ले गया?
8. चूहे की दिल्ली यात्रा के बारे में एक पैराग्राफ लिखो।
9. इनके मतलब बहनजी/मास्साब से पूछो–

   पाजी, घात, जश्न, काबू, फ़ुरसत।

   अब इन शब्दों से एक–एक वाक्य बनाओ।
10. भारत का नक्शा देखकर लिखो कि इटारसी से दिल्ली तक कितने बड़े–बड़े स्टेशन पड़ेंगे।
11. यह कविता किस कवि की है, उनका नाम लिखो।
12. चूहे ने दरवाज़े पर किल्ली लगाने की बात क्यों की?
13. इन पर चर्चा करो और इनके बारे में पता करो–

    आज़ादी का नया ज़माना, लाल किला, तिरंगा, अंग्रेज़, लाट साहब, राष्ट्रपति, गांधी युग।
14. **नीचे तिरंगे झंडे का चित्र बनाओ।**

तिल का ताड़ राई का पहाड़

तो वक्त सबको अच्छे दिन दिखाये और समय पर ठीक अकल सुझाये कि किसी बेनाम गांव के बाहर एक कबीले ने डेरा डाला। हट्टे-कट्टे, लम्बे-तगड़े कई जवान। एक से बढ़कर एक। एक दिन कबीले का एक आदमी गुड़ लेने पंसारी के यहां पहुंचा। बोनी के समय सीधा-सादा ग्राहक आया देख पंसारी बहुत खुश हुआ। तीन बार में तीन से कम तौलना तो उसके बाएं हाथ का खेल था।

गुड़ देखकर आदमी ने कहा, "गुड़ बहुत गीला है।"

पंसारी तपाक से हँसकर बोला, "बरसात का मौसम है ना! नमक और गुड़ तो गीले होंगे ही। माल में खामी हो तो कहना।"

मोल-भाव से निपट कर पंसारी ने बोरी खोली और गुड़ तौलने लगा। वह आदमी तराजू की डांडी और पलड़ों को गौर से देख रहा था। पर उसकी क्या बिसात की पंसारी के हाथ की सफाई ताड़ ले। तभी उस आदमी की नज़र गुड़ पर चिपके एक तिनके पर पड़ी। एक तिनके से तौल में भला क्या फर्क पड़ता है? पर ग्राहक से रहा न गया, उसने तिनका उठाया और अंगुली के झटके से सामने की ओर फेंक दिया।

जहां गुड़ होगा, वहां मक्खियां आयेंगी ही। वे किसी न्योते का इंतज़ार नहीं करतीं। इधर दीवार पर तिनके का चिपकना हुआ और उधर दो-तीन मक्खियां उसकी मिठास का मज़ा लेने लगीं। मक्खियां मिठास के आनन्द में डूबी थीं कि छिपकली एक झपाटे में दो मक्खियां निगल गयी। तीसरी उड़ गयी। छिपकली दूसरी मक्खियों की ताक में दीवार पर अविचल बैठी थी। सहसा पंसारी की बिल्ली अपनी समाधि तोड़कर उस पर झपटी। वह मक्खियों समेत उसके पेट में समा गयी। बिल्ली को अपने शिकार के अलावा कुछ ध्यान न था।

कुत्ते और बिल्ली की दुश्मनी जाने कब से चली आ रही है! उस आदमी का कुत्ता इसी फिराक में था कि किसी तरह बिल्ली उसके हाथ लगे। सीधे बिल्ली पर छलांग मारी। पर यों पकड़ में आ जाये, वह बिल्ली ही क्या! वह पलटकर बिजली की तेज़ी से दुकान में घुस गयी। आगे बिल्ली और पीछे कुत्ता। उनकी भगदड़ में कई बासन लुढ़क गये। कई मटकियां फूट गयीं। बतासे, मिसरी, चीनी, मिर्च-मसाले दालें बिखर गयीं। तेल फैल गया। बैठे-बैठाये पंसारी का नुकसान हो गया। पंसारी ने अपना आपा भूल कर, ज़ोर से एक बाट कुत्ते की ओर फेंका। निशाना तो उसका अचूक नहीं था, पर होनी कहें या संजोग कि वो सीधे कुत्ते के ललाट पर लगा। खून का फव्वारा छूट गया। अब उस आदमी को भी गुस्सा आया! खुद की चोट तो शायद बर्दाश्त कर लेता, पर अपनी जान से भी प्यारे कुत्ते के चेहरे पर खून देखकर उसका खून खौल उठा। उसने पंसारी को एक चांटा जड़ दिया। पंसारी तोबा-तोबा मचाने लगा। पास के दुकानदारों ने पंसारी का रोना-धोना सुना और अपनी-अपनी तोंद और धोती संभालते दौड़े चले आये।

इधर कुत्ता भागा-भागा कबीले गया और जवानों को बुला लाया। तू-तू, मैं-मैं से बात बढ़ी और हाथा-पाई तक पहुंच गई। सैकड़ों लोगों की भीड़ मरने मारने पर उतर आयी। इतने में किसी ने पुलिस को सूचना कर दी पुलिस

आता देख कई लोग भागे, कुछ पकड़े गए और थाने में बंद हुए। बात ही बात में गांव की शांति भंग हो गई। पुलिस ढूंढ-ढूंढ कर लोगों को पकड़ने लगी। काम-धंधा छोड़, लोग छिपने-छिपाने लगे।

गुड़ तौलने वाले पंसारी की दीवार पर तिनका अभी भी चिपका हुआ था। कुछ मक्खियां अब भी मंडरा रही थीं। एक दूसरी छिपकली उनकी टोह में लार टपका रही थी। एक छोटे से तिनके के कारण जितना फसाद हुआ वह ही बहुत, आगे सबको सुमत मिले। कहानी थी तो खतम। पैसे थे तो हजम।

राजस्थानी लोक-कथा

1. बरसात में नमक और गुड़ पसीजकर गीले हो जाते हैं। और क्या-क्या पसीजकर गीला होता है? उनके नाम लिखो।

2. आदमी तराजू को ध्यान से क्यों देख रहा था? तराजू से सही-सही तोलने के लिए क्या-क्या चीज़ें होना ज़रूरी हैं?

3. हम लीटर से क्या-क्या नापते हैं?

4. किलो से क्या-क्या तौलते हैं?

5. मीटर और फुट से क्या-क्या नापते हैं?

6. गुड़ देखकर आदमी ने कहा, "गुड़ बहुत गीला है" पंसारी तपाक से हँसकर बोला, "बरसात का मौसम है ना! नमक और गूड़ तो गीले होंगे ही। माल में खामी हो तो कहना।"

ऐसे ही एक बार सरजू आम वाले से बोली, "आम तो हरे हैं।" आम वाला फिर क्या बोला होगा?

- दूध वाले से जीवन ने कहा, "दूध तो पतला दिखता है।" तो दूध वाला तपाक से बोला होगा

---

7. मतलब लिखो -

कबीला ---------- पंसारी ----------

खामी ---------- समाधि ----------

बासन ---------- अविचल ----------

8 तुमने देखा होगा जरा सी बात पर कोई झगड़ा पड़ा। देखा तो पता लगा कि झगड़ने लायक कोई बात ही न थी। ऐसी कोई घटना सुनाओ।

9. क्रम से जमाओ -

मक्खी बैठी, तिनका दीवार पर चिपका, बिल्ली ने छिपकली खायी,

दूसरे दुकानदार आये, चांटा मारा, कुत्ता बिल्ली पर दौड़ा।

कौआ और मुर्गी

कहानी पढ़ते जाओ और उसमें छूटे हुए शब्दों को खाली स्थान में भरते जाओ।

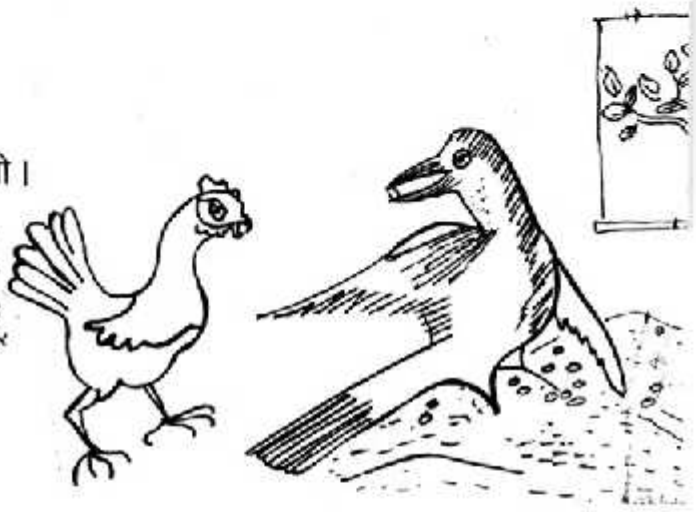

कौआ और मुर्गी दोनों एक घर में ——— थे।

——— दाना लाता था।——— भी दाना लाती थी।

ऐसा करते–करते घर में बहुत ——— जमा हो गया।

एक दिन कौवे ने ——— "मैं चावल लेने ——— हूँ,

तू घर का ——— बन्द रखना नहीं तो कोई

——— ले ———।"

थोड़ी देर बाद एक घोड़ा ———। ———ने कहा,

"मुर्गी–मुर्गी दरवाज़ा——— और मुझे दाना दे।"

——— ने कहा, "नहीं, नहीं मैं दाना ——— ———।"

——— ने कहा, "मुर्गी, मुझे ——— दे,

मुझे बहुत ——— लगी है।"

मुर्गी को दया आ गई। उसने सारा दाना ——— को दे दिया।

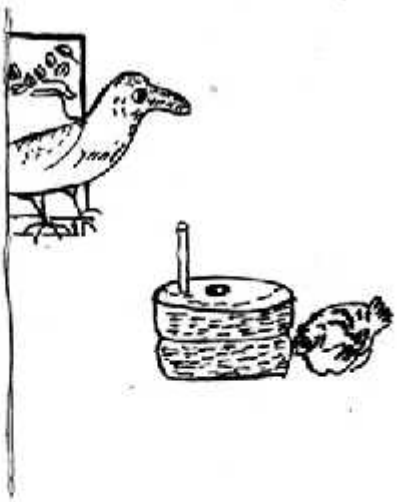

अब ——— सोचने लगी, कौआ दाना माँगेगा तो मैं कहाँ से दूँगी ।

मुर्गी बहुत ———गई।

जब कौआ ———लेकर घर लौटा तब मुर्गी चक्की के पीछे छिप गई।

कौवे ने आवाज़ लगाई, "———, ——— , तू ——— ?"

डर के मारे ——— चुप रही।

एक आवाज़ भी नहीं निकाली।

उस समय एक बिल्ली घर में आई।

बिल्ली ने कहा, "मुर्गी, मुझे अपनी चक्की दे।

मुझे दाना ———————है।"

कौए ने कहा " मुर्गी तो घर में ———————है।

तू अपना ——————— यहीं लाकर पीस ले।"

——————— दाना ले आई और पीसने को बैठी।

बिल्ली ने दाना ——————— में डाला।

मुर्गी ने चट उसे मुँह में भर लिया।

———————ने और दाना ——————— में डाला।

——————— ने उसे भी चट ———————।

बिल्ली ———————लगी पर आटा न निकला।

ये देख बिल्ली बहुत ——————— हुई।

——————— ने सारी बात कौवे को बताई।

कौवा भी बहुत चकित हुआ।

कौवा सोचने लगा दाना कहाँ होगा।

ढूँढ़ते–ढूँढ़ते उसने चक्की के पीछे ———————।

वहाँ मुर्गी मुँह में ——————— भरे बैठी थी।

उसका मुँह दाने से एकदम फूल गया था।

उसे देख कौवा हँसा।

उसे देख बिल्ली भी बहुत ——— ।

दोनों हँसे तो मुर्गी को भी जोर की ———आई।

वो हँसी और उसके मुँह से सारे दाने निकल पड़े।

पहेलियाँ

1. गड़ी खेत में झंडी हरी
   खड़ी खेत में, उल्टी पड़ी
   नीचे सफेद, ऊपर हरी

2. छाँटा जाता, पीसा जाता
   काटा जाता, बाँटा जाता
   बावन हैं, सब साथ रहते
   इनको पत्ता भी हैं कहते

3. एक लाठी की सुनो कहानी
   छुपा है इसमें मीठा पानी

4. पंख नहीं पर उड़ती हूँ
   हाथ नहीं पर लड़ती हूँ

5. नहीं लगते इनके रोपे?
   बीज न इनके होते हैं?
   सबके तन पर होते हैं?

6. घर के कोने में बैठी
   हरदम बुनती रहती जाल
   लेकिन जाकर पकड़े मछली
   कभी न आता उसको ख्याल

7. दर्ज़न से लाते हैं
   छील के उसको खाते हैं

● खाली जगह में पहेली के उत्तर के चित्र बनाओ।

चाचाजी ने पकड़ा चोर

एक रात की बात है
हो रही बरसात है।
घर से निकले चाचाजी
पकड़ो चोर! आवाज़ है।
इधर से आए चाचाजी
उधर से आया चोर।
ज़ोर से भागे चाचाजी,
ज़ोर से भागा चोर।
हुई ज़ोर से टक्कर उनकी
हम सब दौड़े आए
पड़े बेहोश हैं दोनों देखो
अपने सिर फुड़वाए।

सरकारी अस्पताल
वार्ड दो, बिस्तर नम्बर चार ।
3 अक्टूबर

दोपहर दो बजे

प्रिय बिसनू,

देखो न कितनी अजीब–सी बात हो गई। आज सुबह जब मैं होश में आया तो यहाँ बिस्तर पर पड़ा हुआ था। सिर में ज़ोरों का दर्द हो रहा था और मोटी–सी पट्टी बँधी हुई थी। पहले–पहले तो कुछ समझ न आया कि क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, मैं यहाँ कैसे पहुँचा।

याद करने की कोशिश करता हूँ तो सिर का दर्द और बढ़ जाता है। लेकिन कुछ समय बाद मुझे याद आया कि रात के समय मैं कहीं जा रहा था। बारिश भी हो रही थी। फिर चोर! चोर! की आवाज़ आई थी। मैं डर गया था। जिधर से आवाज़ आ रही थी उसकी उल्टी दिशा में भागा था, चोर से बचने के लिए। फिर पता नहीं क्या हुआ और मैं यहाँ अस्पताल में आ पहुँचा।

रात नौ बजे

नर्स आ गई थी इसलिए चिट्ठी आगे नहीं बढ़ी। उसने बताया कि मैंने चोर से टक्कर कर ली थी– हम दोनों का सिर भिड़ गया था और दोनों बेहोश हो गए। चोर भी अस्पताल में दर्ज है, लेकिन दूसरे वार्ड में है और पुलिस उसकी निगरानी कर रही है। नर्स का कहना है कि मैं अब हीरो बन गया हूँ । चोर को पकड़ने के लिए मुझे इनाम मिलेगा! अजीब–सी बात है। जहाँ तक मुझे याद आ रहा है, मैं तो चोर से डर कर भाग रहा था, उसे पकड़ने के लिए नहीं।

बस, अब आगे नहीं लिखता, सिर दर्द करने लगा है। शाम को डॉक्टर ने कहा था कि एक हफ्ता और यहाँ रहना पड़ेगा। हो सके तो तुम सब मुझसे आकर मिलना, नहीं तो चिट्ठी ज़रूर भिजवा देना।

अभ्यास

1. बिसनू ने चाचाजी को अपनी चिट्ठी में क्या लिखा होगा? उसकी तरफ से चाचाजी को एक चिट्ठी लिखो।
2. अस्पताल में चाचाजी को क्या–क्या दिखा होगा? किस–किस तरह की गंध आई होगी? पता कर के लिखो।
3. चाचाजी अस्पताल में क्यों थे?
4. चाचाजी को अस्पताल कौन लाया होगा? कैसे लाया होगा?
5. ऊपर की कविता और चाचाजी की चिट्ठी पर कुल मिलाकर पाँच सवाल बनाओ।
6. अस्पताल में मिलते हैं **नर्स** और **डॉक्टर** बताओ इन जगहों में कौन–कौन मिलते हैं?

बस अड्डा	पुलिस थाना	ब्लाक ऑफिस	तहसील कार्यालय	स्कूल

● खाली जगह में चाचाजी और चोर की टक्कर दिखाते हुए चित्र बनाओ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

चाचाजी की बातें पूरी करो।

खाली स्थान में एक शब्द भरना है–
यह शब्द वाक्य में से ही किसी एक शब्द का उल्टा होगा।

1. कल रात को मैं बेहोश था फिर सुबह होश में आया।

2. सिर की पट्टी मोटी, अंगुली की पट्टी ——— ।

3. —————— में नहीं आया, तू है नासमझ।

4. ——————तो भाग गया, —————— मुझे पकड़ लाई।

5. जब मैं आया तब वह ——————— ।

6. जब मैं अंदर आया तब चोर ——————— गया।

7. कौन ——————, कौन चतुर।

8. इस नर्क में ——————— कहाँ ।

9. कहीं ——————, कहीं अनुचित।

10. असली ——————— की क्या पहचान।